**प्रेस विज्ञप्ति**

# गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
# पन्तनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)
## पशुपालन भी गाजरघास से प्रभावित

पन्तनगर। 19 अगस्त 2023। विश्वविद्यालय में 18वाँ गाजर घास जागरूकता एवं उन्मूलन कार्यक्रम के तीसरे दिन शैक्षणिक डेयरी फार्म, नगला, पंतनगर पर आयोजित किया गया, जिसमें डा. क्रान्ति कुमार, सह–प्राध्यापक, सस्य विज्ञान विभाग एवं सहायक निदेशक, शैक्षणिक डेयरी फार्म ने आये हुये अतिथिगणों डा. एस.पी. सिंह, प्राध्यापक एवं परियोजना अधिकारी, सस्य विज्ञान एवं संयुक्त निदेशक डा. एस.के. सिंह, सहनिदेशक डा. रिपुसुदन कुमार, सहायक निदेशक क्रमशः डा. संदीप कुमार तलवार, डा. सुनील कुमार शैक्षणिक डेयरी फार्म नगला एवं उपस्थित सभी सहभागियों का स्वागत करते हुए गाजर घास जागरूकता अभियान के बारे में अवगत कराया। डा. एस.पी. सिंह ने कहा कि जागरूकता अभियान राष्ट्रीय स्तर पर सप्ताहिक रूप में मनाया जाता है, जिसको सफल बनाने के लिए सभी की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहभागिता जरूरी है। उन्होंने गाजर घास से होने वाले दुष्परिणामों का उल्लेख किया तथा कृषि वैज्ञानिकों को इसके उन्मूलन में आने वाली चुनौतियों तथा इसके निवारण हेतु जानकारी दी। डा. सिंह ने बताया कि गाजरघास के पौधे में छोटे–छोटे रोयें पाये जाते है जो शरीर के सम्पर्क में आने पर दाद, खाज, खुजली आदि पैदा करते है और धीरे–धीरे ये दाद एक्जिमा का रूप ले लेता है तथा परागकणों के श्वसन तंत्र में जाने से श्वास संबंधित बीमारियां जैसे अस्थमा आदि होने की संभावना होती है। उन्होंने बताया कि पशुओं के लिए भी यह गाजरघास अत्यधिक विशाक्त होती है इसको खाने से पशुओं में अनेक प्रकार के रोग जैसे खुजली, एलर्जी आदि हो जाती है और पशुओं में त्वचा संबंधी अन्य बीमारियां उत्पन्न हो जाती है। इस घास को खाने से दुधारू पशुओं के दूध में कड़वाहट के साथ–साथ दूध उत्पादन में भी कमी आने लगती है एवं इस दूध को मनुष्यों द्वारा सेवन करने से मनुष्यों में भी कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते है। गाजरघास के नियंत्रित करने के लिए देशी गेंदा तथा चकवड़ बहुत लाभकारी है जिसके बीज आस–पास के क्षेत्र में छिड़कने से इस गाजरघास पर काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। रसायनों के प्रयोग के साथ–साथ इसका नियंत्रण मैक्सीकन बीटल (*जाइगोग्रामा बाईकोलोरेटा*) द्वारा भी किया जा सकता हैं। एक वयस्क बीटल एक पार्थीनियम के पूर्ण पौधें को 6–8 सप्ताह में खा जाता है। इस बीटल में प्रजनन की अद्भुत क्षमता होती हैं एक स्थान पर जहां पार्थीनियम अच्छी मात्रा में हो कम से कम 500 से 1000 तक वयस्क बीटल छोड़ने चाहिए। तदोपरांत डा. एस.पी. सिंह ने डा. एस.के. सिंह को आमंत्रित करते हुए सभी उपस्थितगणों का आभार व्यक्त किया तथा गाजर घास से होने वाले नुकसान तथा इसके नियंत्रण की अनेक विधियों को संक्षिप्त करते हुए अपने परिसर को गाजर घास से मुक्त करने हेतु संकल्प लेने की बात की।

कार्यक्रम के अन्त में उपस्थित महानुभावों एवं वैज्ञानिकों को मास्क एवं दस्ताने वितरित किए तदोपरान्त उपस्थित कार्मिकों ने फार्म के भीतर मौजूद गाजर घास का उन्मूलन किया तथा मैक्सीकन बीटल कीट छोड़े गए। जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभा में कृषि महाविद्यालय से कृषि वैज्ञानिकों, एस.आर.एफ., आर.एफ., डी. पी.ए. एवं श्रमिकों सहित लगभग 80 लोगों ने भागीदारी की।

*कार्यक्रम में गाजरघास उन्मूलन सप्ताह की जानकारी देते वैज्ञानिक।*

**निदेशक संचार**